ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

एनो मा नि गाम्।

अथर्ववेद : 5/3/4

हे प्रभो! मैं पापी न बनूं।

O God! I should never become a sinner.

वर्ष 40, अंक 34 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 19 जून, 2017 से रविवार 25 जून, 2017

विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 4

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली एवं आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमा के संयुक्त तत्त्वावधान में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमा

6-7-8 अक्तूबर, 2017 (शुक्र-शनि-रवि)

मांडले (म्यांमा-बर्मा)

समस्त विश्व के आर्यजनों से बर्मा पहुंचने का आह्वान : प्रस्थान हेतु अभी से करें तैयारियां आरम्भ

देश-विदेश की समस्त आर्यसमाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों एवं आर्य प्रतिष्ठानों की सूचनार्थ है कि विदेशों में आयोजित होने वाले प्रत्येक सम्मेलन की तरह इस वर्ष म्यांमा में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए यात्रा व्यवस्थाएं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से की जा रही हैं। बर्मा-म्यांमा में आर्यसमाज के 122 वर्षों के इतिहास में पहली बार यह अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमा (बर्मा) के प्रधान श्री अशोक खेत्रपाल जी ने सभी आर्यजनों से अपील करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत ही सम्मिलित होने का निवेदन किया है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी ने आर्यजनों से भारी संख्या में बर्मा पहुंचने और अभी से तैयारियां आरम्भ करने का आह्वान किया है।

विस्तृत जानकारी एवं यात्रा विवरण आगामी अंकों में प्रकाशित किया जाएगा

निवेदक

सुरेशचन्द्र आर्य (प्रधान) प्रकाश आर्य (मन्त्री) आर्य अनिल तनेजा (कोषाध्यक्ष) अशोक खेत्रपाल (प्रधान)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली (भारत) आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के आर्य विद्यालयों का सामूहिक सांस्कृतिकोत्सव

आधुनिक भारत – ले चलें शिखर की ओर

शनिवार 22 जुलाई, 2017 – प्रातः 9 से 1:30 बजे तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली

समस्त विद्यालय अपने विद्यार्थियों के परिवारों को भी अवश्य ही आमन्त्रित करके भारी संख्या में पहुंचें

निवेदक

धर्मपाल आर्य, प्रधान विद्यामित्र ठुकराल, कोषाध्यक्ष विनय आर्य, महामन्त्री सुरेन्द्र रैली, प्रस्तौता

दिल्ली की आर्यसमाजों के लिए क्षेत्रीय गोष्ठियों का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में दिल्ली की आर्यसमाजों की क्षेत्रवार गोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। इन गोष्ठियों में आर्यसमाजों को अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों, प्रशासनिक एवं संगठनात्मक विषयों पर जानकारी दी जाएगी। आपसे निवेदन है कि आप अपनी आर्यसमाज के सभी महत्त्वपूर्ण अधिकारियों तथा सक्रिय महिला पदाधिकारियों के साथ क्षेत्रानुसार अपनी क्षेत्रीय गोष्ठी में अवश्य ही सम्मिलित हों ताकि चर्चाएं तथा सूचनाएं समस्त आर्यजनता तक सरलता से पहुँचाई जा सके और गोष्ठी के उद्देश्यों को पूर्ण किया जा सके। गोष्ठियों का शुभारम्भ पश्चिमी दिल्ली क्षेत्र से किया जा रहा है। पश्चिमी दिल्ली क्षेत्र बड़ा होने के कारण यहां दो गोष्ठियों का आयोजन किया गया है। प्रथम गोष्ठी आर्यसमाज डी. ब्लाक विकासपुरी नई दिल्ली में 25 जून को तथा दितीय गोष्ठी 2 जुलाई, 2017 को आर्यसमाज कीर्ति नगर में सम्पन्न होगी। सभी गोष्ठियों में पधारने के लिए सभी आर्यसमाजों को विधिवत् पत्र भेजकर गोष्ठी के स्थान एवं समय की जानकारी भिजवा दी गई है।

पश्चिम दिल्ली -1 गोष्ठी	पश्चिम दिल्ली-2 गोष्ठी	समय एवं कार्यक्रम
आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी, नई दिल्ली-18 **रविवार : 25 जून, 2017** व्यवस्थापक : श्री बलदेव सचदेवा जी (9911834530)	आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली-15 **रविवार : 2 जुलाई, 2017** व्यवस्थापक : श्री सतीश चड्ढा जी (9540041414)	**चाय/जलपान :** 2:30 बजे **प्रथम सत्र :** 3 से 5 बजे **चाय/नाश्ता :** 5 बजे **द्वितीय सत्र :** 5:15 बजे से **प्रीतिभोज :** 7:30 बजे

यदि आप किसी कारणवश अपने क्षेत्र की निर्धारित गोष्ठी में नहीं पहुंच पाते हैं, तो अन्य क्षेत्र की गोष्ठी में अवश्य ही पहुंचने का प्रयास करें। गोष्ठी के उपरान्त समस्त उपस्थित महानुभावों के लिए सुन्दर प्रीतिभोज की व्यवस्था आर्यसमाज की ओर से की जाएगी। अन्य गोष्ठियों की सूचना आगामी अंकों में दी जाएगी।

निवेदक धर्मपाल आर्य, प्रधान (9810061763) विद्यामित्र ठुकराल, कोषाध्यक्ष (9810072175) विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

18वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन : रविवार 9 जुलाई, 2017

स्थान : आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

विस्तृत जानकारी पृष्ठ 3 पर

वेद-स्वाध्याय

धन का सदुपयोग

पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान् द्रीघीयांसमनु पश्येत पन्थाम्।
ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रान्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः।। -ऋ. 10/117/5
ऋषिः आङ्गिरसो भिक्षुः।। देवता - धनान्नदानप्रशंसा।। छन्दः विराट्त्रिष्टुप।।

शब्दार्थ - **तव्यान्** = धन से बढ़े हुए समृद्ध पुरुष को चाहिए कि वह **नाधमानाय्** = मांगने वाले सत्पात्र को **पृणीयात् इत्** = दान देवे ही; **पन्थाम्** = सुकृत मार्ग को **द्राघीयांसम्** = दीर्घतम **अनुपश्येत** = देखे। इस लम्बे मार्ग में **रायः** = धन-सम्पत्तियां **उ हि** = निश्चय से **रथ्याः चक्राः इव** = रथ-चक्रों की भांति **आ वर्तन्ते** =ऊपर-नीचे घूमती रहती हैं, बदलती रहती हैं और **अन्यं अन्यं उपतिष्ठन्ते** = एक को छोड़कर दूसरे के पास जाती रहती हैं।

विनय - धन को जाते हुए कितनी देर लगती है? व्यापार में घाटा हो जाता है, चोर-लुटेरे धन लूट ले-जाते हैं, बैंक टूट जाते हैं, घर जल जाता है आदि सैकड़ों प्रकार से लक्ष्मी मनुष्य को क्षणभर में छोड़कर चली जाती है। वास्तव में लक्ष्मीदेवी बड़ी चंचल है। वह मनुष्य कितना मूर्ख है जो यह समझता है कि बस, यदि मैं दूसरों को धन दान नहीं करूंगा तो और किसी प्रकार मेरा धन मुझसे पृथक् नहीं हो सकेगा। अरे, धन तो जब समय आएगा तो एक पलभर में तुझे कंगाल बनाकर कहीं चला जाएगा। इसलिए हे धनी पुरुष! यदि इस समय तेरे शुभकर्मों के भोग से तेरे पास धन-सम्पत्ति आई हुई है तो तू इसे यथोचित दान में देने में कभी संकोच मत कर। जीवन-मार्ग को तनिक विस्तृत दृष्टि से देख और सत्पात्र को दान देने में अपना कल्याण समझ, अपनी कमाई समझ। सच्चा दान करना, सचमुच जगत्पति भगवान् को उधार देना है जो बड़े दिव्य सूद के साथ फिर वापस मिलता है। जो जितना त्याग करता है वह उससे न जाने कितना गुणा अधिक प्रतिफल पाता है; यह ईश्वरीय नियम है। दान तो संसार का महान् सिद्धान्त है, पर इस इतनी साफ़ बात को यदि लोग नहीं समझते हैं तो इसका कारण यह है कि वे मार्ग को दूर तक नहीं देखते। जीवन-मार्ग कितना लम्बा है, यह संसार कितना विस्तृत है और इस संसार में जीवों को उनके कब के शुभ-अशुभ कर्मों का फल उन्हें कब मिलता है, यह सब-कुछ नहीं दिखाई देता। इसीलिए हमें संसार में चलते हुए वे अटल नियम भी दिखाई नहीं देते जिनके अनुसार सब मनुष्यों को उनके शुभ-अशुभ कर्मों का फल अवश्यमेव भोगना पड़ता है। यदि इस संसार की गति को हम तनिक भी ध्यान से देखें तो पता लगेगा कि धन-सम्पत्ति इतनी अस्थिर है कि यह रथचक्र की भांति घूमती फिरती है-आज इसके पास है तो कल दूसरे के पास है, परन्तु हम अति क्षुद्र दृष्टिवाले हैं और इसीलिए इस 'आज' में ही इतने ग्रस्त है। कि हम 'कल' को देखते हुए भी नहीं देखते हैं! संसार में लोगों का नित्य धननाश होता हुआ देखते हुए भी अपने धननाश के एक पल पहले तक भी हम इस घटना के लिए कभी तैयार नहीं होते और इसीलिए तनिक-सा धननाश होने पर इतने रोते-चीखते भी हैं। यदि हम मार्ग को विस्तृत दृष्टि से देखें तो इन धनागमों और धननाशों को अत्यन्त तुच्छ बात समझें। यदि संसार में प्रतिक्षण चलायमान, घूमते हुए, इस धन-चक्र को देखें, इस बहते हुए धनप्रवाह को देखें, तो हमें धन जमा करने का तनिक भी मोह न रहे।

साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

पहले बचपन बचाओ!

देश के अन्दर रीति-रिवाज बचाने की बात होती है, प्रथाओं-कुप्रथाओं को बचाने के लिए लोग भिड़ जाते हैं कोई मजहब बचाने की बात करता है तो कोई जाति या उनसे उत्पन्न विसंगतियां, लेकिन इस ओर किसी का ध्यान नहीं है कि पहले राष्ट्र का भविष्य, हमारी भावी पीढ़ी यानि आज का बचपन बचाओ! आज राष्ट्र का भविष्य कहे जाने वाले बच्चों में नशाखोरी की लत इस तेजी से बढ़ रही है कि दस वर्ष की आयु में प्रवेश करते ही ज्यादातर बच्चे विभिन्न प्रकार के नशीले और मादक पदार्थों का सेवन करने लगते हैं।

बच्चों में नशाखोरी की लत का अध्ययन करने वालों का कहना है कि ज्यादातर बच्चों को नशे की लत उनके वयस्क या हमउम्र नशाखोरों के जरिए ही लगती है। परिवार की उपेक्षा के कारण ये भोले-भाले बच्चे नशा कराने वाले को ही अपना मित्र और सच्चा हमदर्द मान लेते हैं और नशे की आदत में पड़कर हर तरह के शोषण का शिकार हो जाते हैं।

नशे की गिरफ्त में आए हुए बच्चे जब मनचाहा नशा नहीं कर पाते हैं तो वे खून में बढ़ती मादक पदार्थों की मांग को पूरा करने के लिए शरीर के लिए घातक पदार्थों का भी सेवन करने लगते हैं, जैसेकि बोन फिक्स, क्यूफिक्स और आयोडेक्स। कई बच्चे तो पेट्रोल और केरोसिन सूंघकर नशे की प्यास बुझाते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के नारकोटिक्स नियंत्रण बोर्ड और 2013 की एक सरकारी रिपोर्ट से पता चला कि भारत में नशे के आदी हर पांच में से एक व्यक्ति की उम्र 21 साल से कम है।

विशेषज्ञों का मानना है कि अपने साथ के लोगों की देखादेखी, साथियों के दबाव और पढ़ाई की चिंता के कारण कई बच्चे तो 11 साल की उम्र से ही नशे के लिए ड्रग्स लेना शुरु कर देते हैं। इनमें से करीब 5 फीसदी की उम्र 12 से 17 साल के बीच पाई गई है। बेघर बच्चों के बीच तो यह समस्या और भी गंभीर है। रिपोर्ट में पाया गया कि भारत के करीब दो करोड़ बेघर बच्चों में से 40-70 फीसदी किसी न किसी तरह के ड्रग्स के संपर्क में आते हैं और इनमें से कई को तो पांच साल की उम्र से ही नशे की लत लग जाती है।

बात केवल एक शहर या स्थान की नहीं है। राजधानी दिल्ली से हजारों किलोमीटर दूर नवी मुम्बई के अनेकों कोनों में स्कूली यूनिफॉर्म पहने बच्चों को अक्सर घास रूपी नशीले पदार्थ खरीदते देखा जा सकता है। नशे वाले ये पौधे वहीं उगाए जाते हैं और चोरी-छिपे उन्हें बेचा जाता है। बच्चों को 50 से 100 रुपये अदा करने पर कई दिन के लिए नशे की यह सामग्री मिल जाती है और आजकल इतनी रकम जुटापाना बच्चों के लिए आम बात है।

मांग बढ़ने के साथ ही इन नशीली चीजों में भी मिलावट की जाती है और इसमें रसायन, कीटनाशक पदार्थ और यहां तक कि जूतों की पालिश भी मिलाकर बच्चों को दे दी जाती है। यह बेहद खतरनाक है और इन चीजों से और भी ज्यादा नशा होता है। ज्यादा समझने के लिए आमतौर पर किसी भी परचून या पान दुकान से भोला गोली और रसीला का पैकेट 2 से 5 रुपये में मिल जाती है, जो असल में भांग से ही बनती है। लड़कियां धूम्रपान करने में हिचकती हैं ऐसे में उनके लिए गांजे का पेस्ट होता है वे इसे मसूढ़ों पर रगड़ती है और यह खून में मिल जाता है। इसकी खुशबू भी माउथ फ्रेशनर की तरह होती है, इसलिए लड़कियां पकड़ में भी नहीं आतीं। जब बच्चों में इस तरह के नशीले पदार्थ की लत बढ़ती है तो उनकी जेब खर्च की मांग भी बढ़ जाती है। लेकिन सभी माता-पिता बच्चों की अधिक जेबखर्च की मांग पूरी नहीं करते। ऐसे में बच्चे चोरी करने लगते हैं। कई बार तो नशीले पदार्थ बेचने वाले लोग शुरुआत में बच्चों को मुफ्त पैकेट देते हैं और बाद में नशे के लिए अधिक रकम वसूलते हैं क्योंकि उन्हें पता चल जाता है कि लत लगने के कारण बच्चे कहीं से भी पैसे का इंतजाम कर ही लेंगे।

नशे के गुलाम ये बच्चे या तो बेमौत मर जाते हैं या फिर अपराध की अंधी दुनिया में प्रवेश कर समाज और देश के लिए विकट समस्या बन जाते हैं। सरकार और समाज बच्चों को नशे की आदत से बचाने के जो भी उपाय कर रही हैं, वे पर्याप्त और प्रभावी नहीं हैं। इसलिए जरूरी है कि देश के भविष्य को पतन के रास्ते से बचाने के लिए परिवार से उपेक्षित, गरीब, अशिक्षित और बाल मजदूरी करने वाले बच्चों को नशे से बचाने के लिए गंभीरता से प्रभावी और कारगर उपाय किए जाने चाहिए।

इस विषय पर यदि शोधकर्ताओं की माने तो इसका सबसे बड़ा कारण संयुक्त परिवार के खत्म होने और एकल परिवार में माता-पिता दोनों के नौकरीपेशा होने की वजह से कई घंटे तक बच्चे किसी की निगरानी में नहीं रहते हैं और बच्चों की जिंदगी से स्थायित्व हटने लगता है। ऐसे में बच्चे अकेले में वही सब कुछ करना चाहेंगे जो उन्हें पसंद आता है। ऐसी स्थिति में बच्चे अपने दोस्तों और इंटरनेट पर ज्यादा निर्भर रहने लगते हैं, जहां उन्हें गलत सूचना भी मिलती है, मसलन पोर्न मूवी से लेकर भांग और गांजे के लाभ की सूचना।

अधिकांश बच्चे इन बातों पर भी गौर करते हैं कि उनके अभिभावक भी धूम्रपान करते हैं तो इसका मतलब यह सब कुछ सामाजिक मान्यता प्राप्त है। इसमें कोई बुराई नहीं है। बीड़ी-सिगरेट, शराब आदि की लत बच्चों में कैसे पड़ती है, इस विषय पर मनोवैज्ञानिकों ने खूब अध्ययन किया है और वे बड़े विचित्र नतीजों पर पहुंचे हैं। उनका कहना है कि छोटा बच्चा जल्दी से जल्दी बड़ा होना चाहता है। आप बड़ों को सुहाने बचपन के गीत गाते सुनेंगे, मगर यथार्थ में ऐसा है नहीं। कोई बच्चा खुश नहीं है बच्चा होने से, उसको लगता है- मैं शक्तिहीन हूं, स्वयं कोई निर्णय नहीं ले सकता। छोटी सी छोटी चीजों के लिए दूसरों से पूछना पड़ता है, मेरी कोई स्वतंत्रता नहीं है। बड़े लोग स्वतंत्र हैं। इसलिए, बच्चा जल्दी बड़ा होने की चाहत में कईबार नशे की लत का भी शिकार हो जाता है, लेकिन वह यह भूल जाता है उम्र में बड़ा होने की यह चाहत उसकी उम्र की खत्म कर रही है। - ***सम्पादक***

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

65वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज ओल्ड राजेन्द्र नगर नई दिल्ली का नौ दिवसीय 65वां वार्षिकोत्सव धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। बच्चों की चित्रकला, सामान्य ज्ञान, वैदिक मंत्र उच्चारण,भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। डॉ. महेश विद्यालंकार जी, आचार्य अंकित जी एवं वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी का उपदेशामृत हुए। समापन समारोह के अध्यक्ष आचार्य गवेन्द्र शास्त्री व मुख्य वक्ता आचार्य धर्मबन्धु जी (गुजरात) रहे। *- मन्त्री*

पृष्ठ 4 का शेष

शाकाहार में आमतौर पर देखा जाए तो आज तक किसी को आम फ्लू, ककड़ी या खीरा फ्लू नहीं सुना लेकिन इसके विपरीत मांसाहार में बर्ड फ्लू और स्वाइन फ्लू जैसी बीमारियां मुर्गियों और सुअरों के जरिए इंसानों को अपना शिकार बनाती हैं। इन प्राणियों का मांस खाना इसकी सबसे बड़ी वजह मानी जाती है। जबकि शाकाहारी जीवनशैली को अपना कर इनसे होनेवाली बीमारियों से खुद को बचाया जा सकता है।

अक्सर जाकिर नाइक जैसे कुछ लोग मांसाहार को सही साबित करने के लिए कहते हैं कि पौधों में भी जीवन होता है। इस कुतर्क को देने से पहले जाकिर नाइक ये नहीं सोचते की पौधों में उनका दिमाग नहीं होता परन्तु किसी जीव को आप जब मारते हैं तो उसे, दु:ख, दर्द, पीड़ा होती है और उसको मारकर खाना बहुत ही बड़ा पाप है। जाकिर नाइक जैसे कुछ लोग हमारे पैने वाले दांतों का हवाला भी देते हैं और कहते हैं कि भगवान ने इंसान को पैने दांत मांस खाने के लिए ही दिए हैं लेकिन अगर ईश्वर की दी हुई हर चीज का प्रयोग करना जरूरी है तो नाखून क्यों काटे जाते हैं?

एक सबसे बड़ा कुतर्क ये है कि अगर जानवरों को नहीं मरेंगे तो उनकी संख्या बहुत बढ़ जाएगी लेकिन देखा जाये तो कुछ जानवर ऐसे हैं जिनको कोई नहीं खाता लेकिन फिर भी वे विलुप्ति की कगार पर हैं। खाने वाले जानवरों को सिर्फ खाने के लिए फार्मों में पाला जाता है और कृत्रिम रूप से बड़ा किया जाता है। अगर मांसाहार बंद हो जाएगा तो ये मांस उद्योग भी बंद हो जाएगा।

भारत के महान वैज्ञानिक जैसे श्री अब्दुल कलाम जी भी शाकाहारी ही थे। अभिनेता अमिताभ बच्चन से लेकर फिल्म अभिनेत्री रेखा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तक विश्व के अनेकों स्वस्थ और प्रभावशाली व्यक्ति शाकाहारी भोजन करते हैं मांस मनुष्य का स्वाभाविक भोजन नहीं है। किसी भी धर्म में मांस खाना अनिवार्य नहीं है। ऐसा कहीं नहीं लिखा है कि जो मांस नहीं खाएगा, वह अच्छा हिन्दू या अच्छा मुसलमान या अच्छा ईसाई या अच्छा सिख नहीं होगा। सभी धर्मो के मुखियाओं को चाहिए कि वे अपने अनुयायियों को जीव-हिंसा से मुक्त रखकर एक स्वस्थ समाज की स्थापना करें।

-विनय आर्य

गुरुकुल विद्यार्थियों के लिए आवश्यक सूचना

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली के 10 गुरुकुल-शिक्षित ब्रह्मचारियों को जो उच्चशिक्षा बी.ए., एम.ए. बी.एड., करना चाहते हैं, उनके निवास तथा सहयोग की समाज ने योजना बनाई है। जो मेधावी विद्यार्थी पढ़ने में योग्य हैं जिनमें आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के कार्यों में रुचि, निष्ठा एवं भावना है उन्हीं विद्यार्थियों को वरीयता दी जायेगी। आवासीय समय में आर्य समाज द्वारा गठित समिति के निर्देशों व बातों का पालन करना अनिवार्य होगा। चयन समिति के साक्षात्कार द्वारा ही किया जायेगा। इच्छुक विद्यार्थी 30 जून तक आवेदन पत्र स्वयं या डाक द्वारा निम्न पते पर प्रेषित करें- **प्रधान जी/मंत्री जी आर्य समाज राजेन्द्र नगर, निकट राजेन्द्र प्लेस मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली-60**

-नरेन्द्र मोहन वलेचा, मंत्री

प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल मुजफ्फरनगर उ.प्र. में नये सत्र के प्रवेश 1 जुलाई 2017 से आरम्भ हो रहे हैं। संस्था में प्रवेश के लिए छात्र का 5वीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

प्रेमशंकर मिश्र, प्रधानाचार्य,
मो. 9411481624, 09997047680

सेवक चाहिए

आर्यसमाज केशवपुरम्, लारेंस रोड, नई दिल्ली-35 को एक सेवक की आवश्यकता है। इच्छुक सेवाभावी महानुभाव सम्पर्क करें।

- मनवीर सिंह राणा, मन्त्री
मो. 9971823677

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली-110060

प्रधान	- श्री अशोक सहगल
मन्त्री	- श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा
कोषाध्यक्ष	- श्री सतीश कुमार

आर्य समाज रोहिणी सै.-7 दिल्ली-110085

प्रधान	- श्री नरेश पाल आर्य
मन्त्री	- श्री संजीव गर्ग
कोषाध्यक्ष	- श्री देवराज आर्य

पाठकगण कृपया ध्यान दें

आर्य सन्देश के सभी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आर्य सन्देश की कुछ प्रतियां डाक से प्रेषित करने के उपरान्त कुछ दिनों बाद डाक वितरित न होने के कारण कार्यालय में वापस आ जाती हैं। आप सभी सदस्यों से प्रार्थना है कि आप अपना सम्पर्क सूत्र (दूरभाष/चलभाष) दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में सम्पादक को अतिशीघ्र प्राप्त कराने की कृपा करें ताकि आपसे सम्पर्क कर कारण का स्पष्टीकरण हो सके।

-सह व्यवस्थापक, 9540040324

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

18वां वैवाहिक परिचय सम्मेलन : 9 जुलाई, 2017

आवेदन की अन्तिम तिथि 28 जून, 2017

हम सब मिलकर आर्यसमाज के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए कृतसंकल्प हैं। इसी निमित्त हम अनेक कार्यों का सम्पादन अपने-अपने आर्य समाजों के माध्यम से निरन्तर कर रहे हैं। आर्यसमाज की विचारधारा व्यक्ति की नहीं परिवार की विचारधारा है। जब तक आर्यसमाज परिवार के साथ नहीं जुड़ेगा तब तक हम सशक्त नहीं हो सकते। इसी क्रम में आवश्यक प्रतीत हुआ कि हमें अधिक से अधिक आर्य परिवारों के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। आर्य परिवारों के सामने एक ऐसे मंच का अभाव सा है जहां वे अपने गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार अच्छे वर-वधू का चयन कर सकें। जाति के आधार पर बने अनेक संगठन तो इस कार्य को कर रहे हैं किन्तु वैदिक विचारधारा वाले महानुभाव जिनमे कोई भी जाति का आधार न हो, उनके लिए ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी। इस हेतु सभा ने गत 7 वर्ष पूर्व आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलनों के कार्य को आरम्भ किया था। तब से इसकी उपयोगिता के चलते ये निरन्तर चलता चला आ रहा है। इस वर्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में **18वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन** रविवार दिनांक **9 जुलाई 2017** को प्रात: 10 बजे से **आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकास पुरी, नई दिल्ली**-110018 में आयोजित किया जाएगा। **आवेदन की अन्तिम तिथि 28 जून, 2017 है।** अन्तिम तिथि के बाद प्राप्त होने वाले आवेदनों को विवरणिका में स्थान नहीं दिया सकेगा। उन आवेदनो को तत्काल पंजीकरण के रूप में स्वीकार किया जा सकेगा, जिनका विवरण पूरक पुस्तिका के साथ केवल प्रतिभागियों को ईमेल द्वारा प्राप्त हो सकेगा।

आर्यजन अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम 300/- रुपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न करके भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **एक्सिज बैंक** खाता संख्या 910010001816166 करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजे।

आर्यजनों/पाठकों एवं आर्यसमाज के सभी पदाधिकारियों/सदस्यों से निवेदन है कि अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों में बार-बार इसकी सूचना देवें तथा प्रकाशित फार्म की प्रतियां करके आर्यसमाज में रखवा लेवें, मांगने पर अपने सदस्य को दें और नोटिस बोर्ड पर लगाकर, सदस्यों को यह भी निवेदन करें कि वे अपने सम्पर्क के परिवारों को इसमें भाग लेने के लिए प्रेरित करें। सम्पर्क करें-

अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक **मो. 9414187428)**
एस. पी. सिंह, संयोजक, दिल्ली **मो. 9540040324)**

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 19 जून, 2017 से रविवार 25 जून, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 22/23 जून, 2017

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 21 जून, 2017

योग दिवस : सुझावों पर तमाशा क्यों?

सन् 2014 में सत्ता हासिल करने के बाद भाजपा की अगुवाई वाली नरेंद्र मोदी सरकार ने आयुष मंत्रालय का गठन किया था, ताकि शरीर को स्वस्थ रखने की भारत की पुरातन पद्धति योग को बढ़ावा दिया जा सके। लेकिन विगत दोनों वर्षो की तरह इस बार फिर 21 जून अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस बेवजह राजनितिक बहस बिना पूरा होता नहीं दिखाई दे रहा है। जिस तरह पिछले दोनों वर्षो में योग दिवस पर ओ३म् और सूर्य नमस्कार को लेकर राजनितिक तू–तू मैं–मैं हुई थी ठीक उसी तरह इस वर्ष भी केंद्र सरकार के आयुष मंत्रालय की गर्भवती महिलाओं को दी गई सलाह काफी चर्चा का विषय बनी हुई है। मंत्रालय ने अपनी एक रिपोर्ट में स्वस्थ्य जच्चा और सेहतमंद बच्चे के लिए सलाह दी है कि गर्भवती महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान इच्छा, क्रोध, लगाव, नफरत और वासना से खुद को अलग रखना चाहिए। साथ ही बुरी संगत से भी दूर रहना चाहिए। हमेशा अच्छे लोगों के साथ और शांतिप्रिय माहौल में रहें। आयुष मंत्रालय ने मदर एंड चाइल्ड केयर नामक बुकलेट जारी की है जिसमें, ये सलाह दी गई है।

आयुष मंत्रालय की सलाह यहां तक सीमित नहीं रही। मंत्रालय आगे कहता है कि यदि आप सुंदर और सेहतमंद बच्चा चाहती हैं तो महिलाओं को ''इच्छा और नफरत'' से दूर रहना चाहिए, आध्यात्मिक विचारों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। अपने आसपास धार्मिक तथा सुंदर चित्रों को सजाना चाहिए। इस बुकलेट में गर्भकाल के दौरान योग और अच्छी खुराक के फायदों के बारे में भी बताया गया है। साथ में यह भी बताया गया है कि इस दौरान महिलाओं को स्वाध्याय करना, अध्यात्मिक विचार, महान हस्तियों की जीवनी पढ़ने आदि में खुद को व्यस्त रखना चाहिए।

हालांकि यह बात समझ से परे है कि इन बातों को राजनेता विवादित क्यों बता रहे हैं! जबकि हमारी संस्कृति हमारे धर्म ग्रन्थ इन सब चीजों को बगैर किसी विवाद के स्वीकारते हैं। कांग्रेस ने इस सुझाव पर जहां भाजपानीत सरकार की असंवेदनशील होने के लिए आलोचना की और कहा कि प्राचीन भारत का विषय योग भगवा दल का नहीं है, वहीं जद यू ने इसे भारतीय जनमानस पर सांप्रदायिक एजेंडा को थोपने का एक और प्रयास करार दिया।

जबकि हमारे प्राचीन ग्रन्थों, प्रकृति और मनुष्य पर शोध करने वाले ऋषि मुनियों के अनुसार इस धरती पर रहने वाले सभी जीवों को भगवान का अंश माना जाता है। इनमें से किसी भी जीव की हत्या करना शास्त्रों के मुताबिक पाप है। मांसाहार भोजन के लिए रोजाना न जाने कितने ही बेजुबान जानवरों की बलि चढ़ाई जाती है। जबकि हमारी संस्कृति में मांसाहार के सेवन को वर्जित माना गया है और मांसाहार भोजन इंसानों का खाना नहीं बल्कि राक्षसी भोजन है। मांस और मदिरा जैसी चीजें तामसिक भोजन कहलाती हैं। इस तरह का भोजन करनेवाले लोग अक्सर कुकर्मी, रोगी, दुखी और आलसी होते है।

इन्सान के स्वभाव पर शोध करने वाले बताते हैं कि मांसाहार भोजन करने से इंसान के भीतर चिड़चिड़ापन आने लगता है। वह स्वभाव से उग्र होने लगता है। मांसाहार भोजन तन और मन दोनों को अस्वस्थ कर देता है, यही नहीं मांसाहारी लोगों में कई तरह की गंभीर बीमारियों का खतरा शाकाहारी लोगों के मुकाबले कहीं ज्यादा होता है। इससे हाई ब्लड प्रेशर, डायबिटीज, दिल की बीमारी, कैंसर, गुर्दे का रोग, गठिया और अल्सर जैसी कई बीमारियां अपनी चपेट में ले लेती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार मांसाहार इंसान के शरीर के लिए उतना ही खतरनाक है जितना कि धूम्रपान। इस रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि पके हुए मांस से जानलेवा कैंसर का खतरा होता है। मांसाहारी भोजन की तुलना में शाकाहारी भोजन सेहत के लिए ज्यादा फायदेमंद होता है। शाकाहारी भोजन इंसान को स्वस्थ, दीर्घायु, निरोग और तंदुरुस्त बनाता है। शाकाहारी व्यक्ति हमेशा ठंडे दिमागवाले, सहनशील, सशक्त, बहादुर, परिश्रमी, शांतिप्रिय और आनंदप्रिय होते हैं।

– *शेष पृष्ठ 3 पर*

प्रतिष्ठा में,

पर्यावरण शुद्धि यज्ञ के लिए हार्दिक धन्यवाद

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर सर्वाधिक 44 स्थानों पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ सम्पन्न कराने के लिए सभा आर्यसमाज कृष्ण नगर के समस्त अधिकारियों, सभासदों एवं सदस्यों का हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करती है। आर्यसमाज कृष्ण नगर के सामने सैन्ट्रल पार्क में हुए यज्ञ में क्षेत्रीय निगम पार्षद श्री सन्दीप कपूर ने यजमान के रूप में पधारकर आहुतियां प्रदान की।

– *महामन्त्री*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह